मार्गरेट मीड

एंथ्रोपोलॉजिस्ट

मार्गरेट मीड

एंथ्रोपोलॉजिस्ट

जॉनसन

बहुत समय पहले की बात है, मार्गरेट मीड नाम की एक छोटी लड़की
पेनसिल्वेनिया में अपनी माँ, पिता और दादी के साथ रहती थी.
कई मायनों में मार्गरेट का परिवार अन्य परिवारों की तरह ही था,
लेकिन कई मायनों में वो अलग भी था.
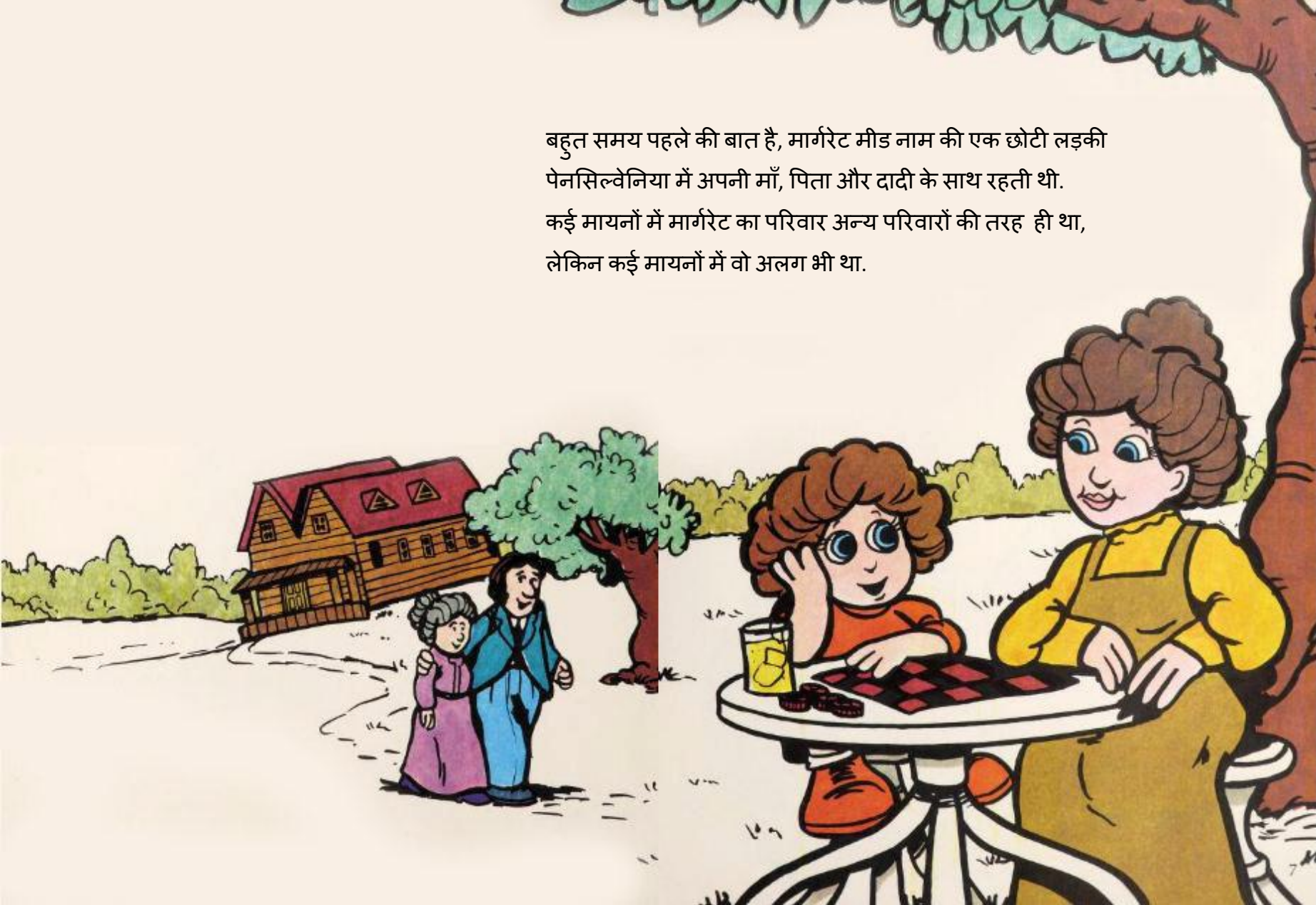
मार्गरेट के पिता एक कॉलेज प्रोफेसर थे. जब वह बहुत छोटी थी तब मार्गरेट को "प्रोफेसर" का मतलब नहीं पता था. "प्रोफेसर डैडी" उसने एक दिन पूछा, "आप क्या करते हैं?"

"एक प्रोफेसर वह होता है जो हमेशा कुछ नया सीखता रहता है," उसके पिता ने कहा, "और जो अपना ज्ञान अन्य लोगों को सिखाता है. मैं ऐसा इसलिए करता हूं क्योंकि दुनिया के ज्ञान में कुछ जोड़ने से अधिक महत्वपूर्ण मुझे और कुछ नहीं लगता है."

"शायद मैं बड़ी होकर वही करूं," मार्गरेट ने अपने पिता से कहा, "मैं भी दुनिया के ज्ञान में कुछ जोड़ने की कोशिश करूंगी."

मार्गरेट की मां उस समय कॉलेज की स्नातक थीं, जब बहुत महिलाएं कॉलेज नहीं जाती थीं. वह एक सामाजिक वैज्ञानिक थीं. वो अन्य लोगों का बहुत ख्याल रखती थीं. मार्गरेट की दादी भी उनके साथ रहती थीं. वह एक शिक्षक, एक स्कूल प्रिंसिपल, एक पत्नी और माँ भी थी. अब वह एक प्यारी दादी भी थी.

मार्गरेट अपनी मां, पिता और दादी से बहुत प्यार करती थी. वह एक अद्भुत परिवार की सदस्य बनकर बहुत खुश थी.

जब मार्गरेट बहुत छोटी थी, तो वो सोचती थी कि सभी बड़ी महिलाएँ शायद उसकी माँ और दादी की तरह ही हों - उन्होंने किताबों का अध्ययन किया था और दुनिया में क्या हुआ उसके बारे में पढ़ा था. वे अपने विचारों और के बारे में चर्चा करती थीं.

लेकिन जब मार्गरेट दस साल की थी, उसकी माँ उसे एक परेड के लिए ले गईं. यह ब्रास बैंड और लेफ्ट-राइट वाली सामान्य परेड नहीं थी. परेड में तमाम महिलायें सड़क पर मार्च कर रही थीं और और भीड़ में लोगों को कागज़ की पर्चियां बाँट रही थीं.

"वो यह क्यों कर रही हैं?" मार्गरेट ने अपनी माँ से पूछा.

"क्योंकि हम मताधिकार की मांग कर रहे हैं," उसकी माँ ने कहा."हम मताधिकार प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं - वोट देने का अधिकार - महिलाओं के लिए, जिस वोट का अधिकार पुरुषों के पास पहले से ही है."

"आपका मतलब है कि महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं है?" मार्गरेट ने रोते हुए कहा. "लेकिन यह तो उचित नहीं है "

"बेशक, यह उचित नहीं है," उसकी माँ ने कहा, "लेकिन ज्यादातर लोग अभी यह बात समझ नहीं पाए हैं."

उसके एक दिन बाद, मार्गरेट ने देखा कि माँ उसे देख रही थीं और अपनी डायरी में कुछ चीज़ें लिख रही थीं.
"आप क्या कर रही हो, माँ?" मार्गरेट ने पूछा.
"मैं तुम्हारे बारे में सोच रही हूं और तुम क्या-क्या कर रही हो उसके बारे में लिख रही हूं," श्रीमती मीड ने कहा. "मैं लोगों को गौर से देखती हूँ और यह समझने की कोशिश करती हूं कि वे जैसे हैं वे वैसे क्यों हैं. तुम मेरे लिए दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक हो!"
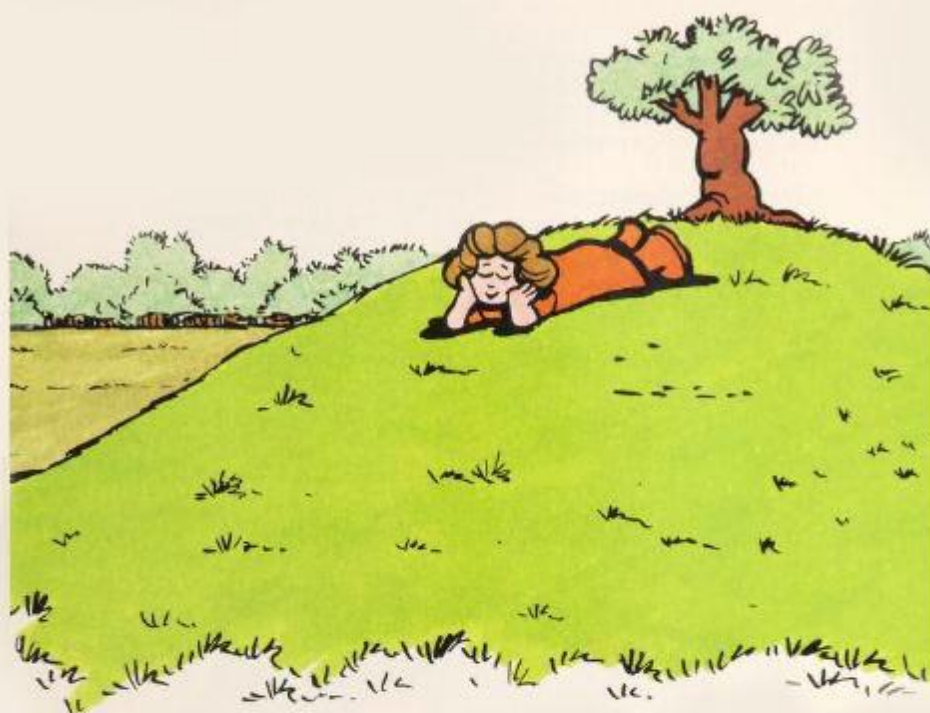
मार्गरेट को अपनी मां की नोटबुक का हिस्सा होने पर बहुत गर्व महसूस हुआ. माँ उस पर इतना ध्यान देती हैं यह बात उसे पसंद आई. कभी-कभी वह पड़ोस के अन्य बच्चों को समझाती थी कि वह कैसा महसूस करती थी, लेकिन वे उसकी बातें समझ नहीं पाते थे. उसका छोटा भाई और बहनें भी नहीं समझ पाते थे. वे अभी बहुत छोटे थे.
इसलिए, समय के साथ, मार्गरेट अकेले में अपने इन विचारों को समझने की कोशिश करती थी. "जब मैं बड़ी हो जाऊंगी, तो मैं भी नोटबुक रखूंगी," उसने फैसला किया.
"हाँ, जब मैं बड़ी हो जाऊंगी तब मैं और क्या-क्या करूंगी?"
बेशक कोई भी मार्गरेट को नहीं बता सकता था कि वह क्या करेगी. फिर उसने जितना ज़्यादा सोचा वो उतनी ही और हैरानी और उलझन में पड़ती गई. अंत में, एक आश्चर्यजनक बात हुई!

एक छोटा सा जीव जादुई तरीके से हवा से बाहर निकला, और ठीक मार्गरेट के सामने आकर खड़ा हुआ. "ठीक है, आप अपनी माँ की तरह एक सामाजिक वैज्ञानिक हो सकती हैं," एक छोटी आवाज़ ने कहा, "या फिर दादी की तरह एक शिक्षक. और आप चाहें तो पूरी तरह से कुछ अलग कर सकती हैं!"

"यह वास्तव में नहीं हो रहा है," मार्गरेट ने कहा. "लगता है मैं खुद से बातें कर रही हूं. हाँ, मैं बिल्कुल यही कर रही हूं. और मैं खुद अपने विचारों को सुन रही हूं. यह सोचने का एक अद्भुत तरीका है," उसने सोचा.

"मैं पेर हूँ," छोटे जीव ने मार्गरेट को अपना परिचय देते हुए कहा.

"पेर? क्या यह तुम्हारा पूरा नाम है?" मार्गरेट ने विनम्रता से पूछा.

"नहीं, मेरा अंतिम नाम सूर्य है, इसलिए मैं वास्तव में पेर सूर्य हूं."

मार्गरेट हँसी और हँसी. "क्या खूब नाम है!" उसने कहा. "आप लड़का हैं, या लड़की?"

"यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण नहीं है, क्यों?" पेर सूर्य ने कहा.

“तुम्हारी माँ हमेशा क्या कहती हैं, हम सभी सिर्फ इंसान हैं."

"तुम बड़े होकर क्या करोगी, इसके बारे में बहुत चिंता करने की ज़रूरत नहीं है," पेर सूर्य ने कहा. "तुम जानती हो कि तुम अपनी माँ की तरह ही लोगों को समझना चाहती हो. साथ में तुम पिता की तरह दुनिया के ज्ञान में अपना योगदान करना चाहती हो. अगर तुम वाकई में उन दोनों कामों को करना चाहती हो, तो तुम उन्हें करने में ज़रूर सफल होंगी. उन्हें कैसे करना है वो सही समय आने पर तुम्हें खुद पता चल जायेगा. मेरी बात पर विश्वास करो."
क्योंकि वे मार्गरेट के खुद अपने विचार थे, इसलिए मार्गरेट ने उनपर विश्वास किया. जैसे-जैसे वो बड़ी होती गई, वह क्या करेगी वह उसके बारे में सोचती रही.

वह न्यूयॉर्क के कॉलेज गई, ठीक उसी तरह जैसे उसकी माँ और दादी गईं थीं. पेर सूर्य भी उसके साथ-साथ गया, क्योंकि वो अभी भी अपने विचारों की संगत को पसंद करती थी.
"शायद मुझे कला का अध्ययन करना चाहिए," उसने एक दिन पेर सूर्य से परिसर में घुसते हुए कहा. "या शायद राजनीति या विज्ञान बेहतर होगा."
"जब तुम सही चीज़ खोजोगी, तो तुम्हें उसका खुद पता चल जाएगा," पेर सूर्य ने सलाह दी. "अब तुम जल्दी से क्लास में जाओ नहीं तो तुम्हें क्लास के लिए देरी हो जाएगी!"
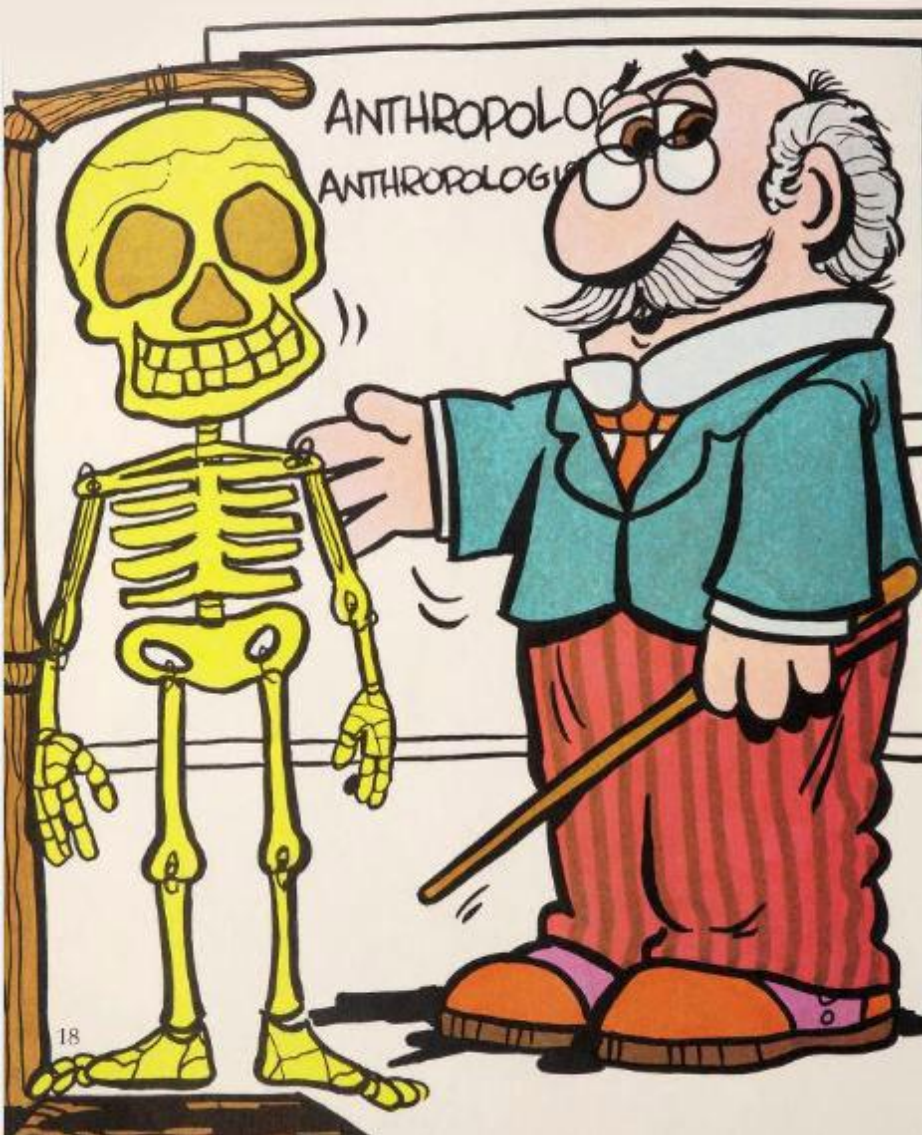
फिर मार्गरेट दौड़ने लगी. पेर सूर्य उसके पीछे-पीछे गया, और जब वे कक्षा में पहुँचे, तो प्रोफेसर वहाँ व्याख्यान शुरू करने के लिए तैयार थे.

"मेरा नाम फ्रांज़ बोअज़ है," उन्होंने कहा, "और हमारा विषय मानव-विज्ञान (Anthropology) है. इस विषय में हम लोगों का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं."

"लोगों का एक अध्ययन!" मार्गरेट ने पेर सूर्य के कान में फुसफुसाया. "यह विषय मुझे बहुत अच्छा लग रहा है."

प्रोफेसर ने अपना व्याख्यान ज़ारी रखा. "मानव-विज्ञानी वो वैज्ञानिक होते हैं जो समय-समय पर दुनिया भर के लोगों को समझने की कोशिश करते हैं," उन्होंने कहा. "मानवविज्ञानी सभी लोगों के बारे में ऐसे सोचते हैं जैसे कि वे एक बहुत बड़े परिवार के सदस्य हों."

"उसका मतलब है," मार्गरेट ने कहा. "कि प्रत्येक व्यक्ति, मानव परिवार का एक हिस्सा है."

पेर मुस्कुराया. आखिरकार मार्गरेट जो करना चाहती थी, वो उसे मिला गया था. मार्गरेट मीड एक मानवविज्ञानी बनना चाहती थी.

मार्गरेट ने कई वर्षों तक मानवविज्ञान का अध्ययन किया. फिर उसे न्यूयॉर्क शहर में अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री में नौकरी मिल गई.
अंत में वह अपने जीवन का कैरियर शुरू करने को तैयार थी.
उन दिनों, अधिकांश मानवविज्ञानी प्राचीन सभ्यताओं का अध्ययन करते थे. वे पुरानी किताबें पढ़ते थे और ध्वस्त शहरों के अध्ययन से, अतीत में लोगों के रहन-सहन के बारे में पता लगाते थे.
मार्गरेट मीड, खंडहरों का अध्ययन या प्राचीन पुस्तकें नहीं पढ़ना चाहती थीं. उसने मानव परिवार के बारे में जानने का एक बेहतर तरीका सोचा.

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वो क्या था?
"मैं एक ऐसी सभ्यता का अध्ययन करूंगी जो न्यूयॉर्क से बहुत दूर होगी," उसने निश्चय किया. "मैं वहां जाऊंगी और खुद जाकर देखूंगी कि वहां के लोग आज - वर्तमान में, कैसे रहते हैं."
"यदि आपको एक अनजान जगह में रहने से डर नहीं लगता है, तो अलग-अलग लोगों के रीति-रिवाजों को समझने का वो एक शानदार तरीका हो सकता है," बोअज़ ने कहा. "शायद तब आप एक महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर पा सकें : क्या सभी स्थानों, देशों में, लड़के-लड़कियों के लिए खुश वयस्क बनना एक मुश्किल बात होती है?"
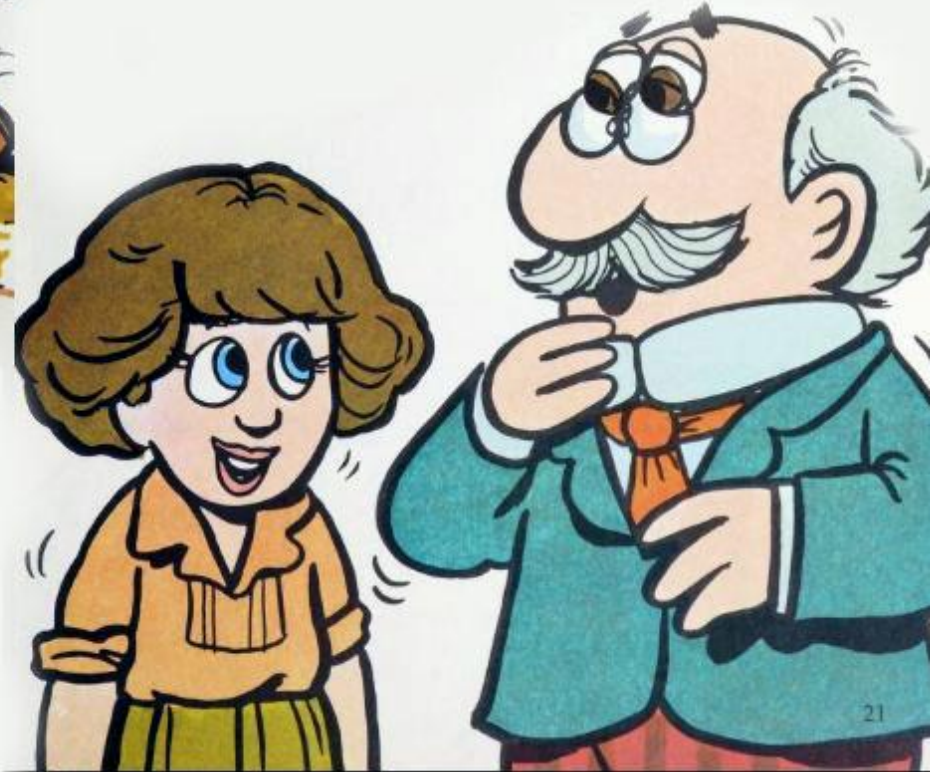
मार्गरेट ने सोचा कि वह उस प्रश्न का उत्तर खोजेगी.
फिर उसने दक्षिण समुद्र (South Seas) में स्थित दूर द्वीपों के एक समूह समोआ के लोगों के बीच रहने का फैसला किया. उसने जल्दबाजी में घर पर अपनी माँ-पिता, दादी और अपने भाई-बहनों को उसके बारे में बताया.
"तुम्हें घर का प्यार और आराम वहां पर नहीं मिलेगा," पेर सूर्य ने कहा.
"हां, वो सच है," मार्गरेट ने कहा, "लेकिन सोचो ज़रा, उस साहसिक काम में मुझे कितना मज़ा आएगा!"
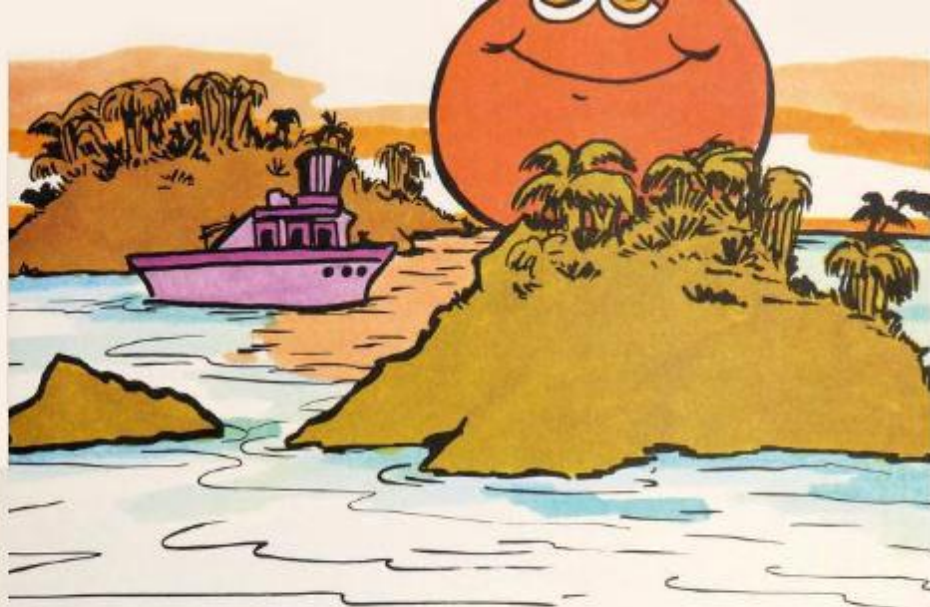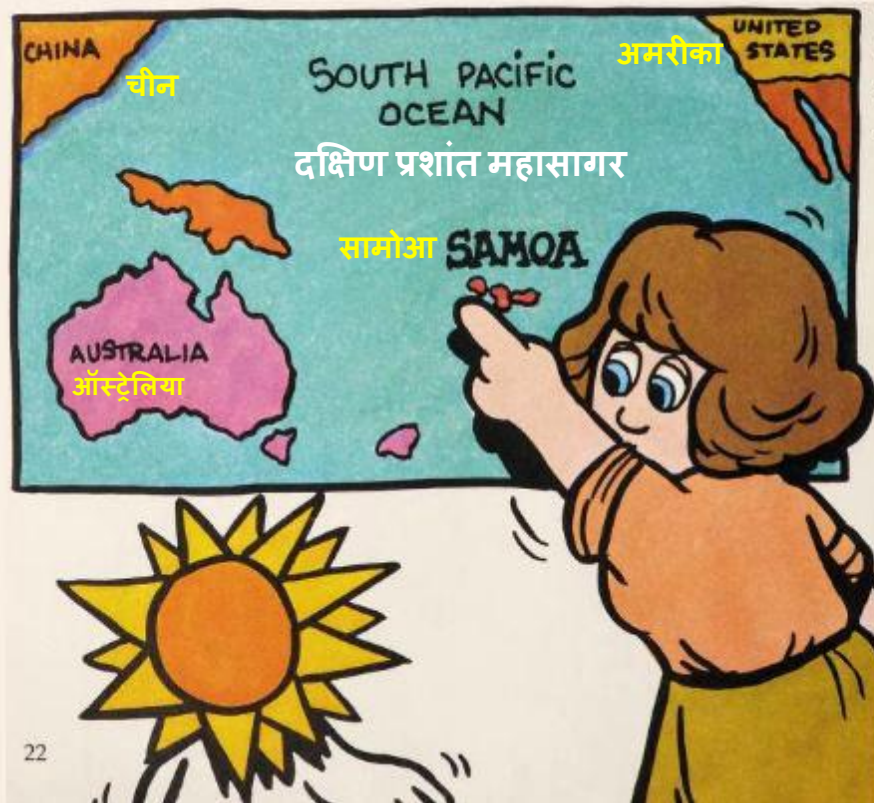
मार्गरेट ने अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को गले लगाया. फिर वह चली गई. उसके पिता मुस्कुराए. वह देख सकते थे कि मार्गरेट ठीक वही कर रही थी जो वह हमेशा करना चाहती थी. "फिर उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा," उन्होंने कहा.
"तुम्हें क्या लगता है : समोआ में हमें क्या मिलेगा?" पेर सूर्य ने यात्रा के दौरान पूछा.
मार्गरेट हंसी. "तुमने पहले मुझसे कहा था कि यह पता करने के लिए कि मैं क्या करना चाहती हूँ मुझे लम्बा इंतजार करना पड़ेगा. अब हम इंतजार करेंगे और देखेंगे कि समोआ में हम क्या कर पाते हैं. वहां पहुंचने से पहले हम उसके बारे में कुछ नहीं कह सकते हैं?”
"बिल्कुल ठीक," पेर सूर्य ने सहमति व्यक्त की. "बस मैं यह सोच रहा था कि एक द्वीप पर जहां लोगों की अलग भाषा और रीति-रिवाज बिल्कुल अलग हों, वहां कैसा होगा."

जब मार्गरेट मीड समोआ में उतरी, तो उसने फैसला किया कि वो वियातोगी गांव में रहेगी. हालांकि, वहां के स्थानीय मुखिया को मीड पर शक था.

"तुम कौन हो और यहाँ क्यों आई हो?" उसने पूछा.

"मुझे मार्गरेट मीड कहते हैं," उसने कहा. "मैं बहुत दूर से आपसे मिलने के लिए आई हूं. मेरे लोग आपके लोगों और तरीकों के बारे में अधिक जानना चाहते हैं. आपकी अनुमति से मैं आपके बीच रहूंगी ताकि मैं आपकी कहानी लोगों को सही तरीके से बता सकूं."

मुखिया अभी भी संदिग्ध था."क्या तुम सिर्फ इसलिए यहाँ आई हो जिससे तुम दूसरों को हमारी कहानी बता सको?" उसने पूछा. "यह करने की क्या ज़रुरत है?"

"क्योंकि अगर मेरे लोग यहां के लोगों के जीवन को समझ पाए," मार्गरेट ने कहा, "तो शायद हम लोग खुद अपने आपको बेहतर तरीके से समझ पाएंगे."

"यह एक बुद्धिमान जवाब है," प्रमुख ने कहा. फिर उन्होंने मार्गरेट को अपने परिवार के साथ रहने और खाने के लिए आमंत्रित किया.

मार्गरेट ने जल्द ही पता चला कि समोआ में लोग अपनी उंगलियों से खाना खाते थे. फिर उसने भी वही किया.

"अगर मैं घर पर ऐसा करती तो लोग मुझे असभ्य समझते," उसने कहा. "लेकिन यहाँ अगर मैं उंगलियों से खाना नहीं खाती तो असभ्य लगती. समोआ में मुझे लोगों के खाने के तरीके की या उनके रहने के तरीकों की आलोचना नहीं करनी चाहिए."

"सच में, तुम्हें ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए," पेर सूर्य फुसफुसाया. "यदि तुम वास्तव में किसी को समझना चाहती हो, तो कुछ समय उनके साथ रहने से बेहतर और कोई तरीका नहीं हो सकता है."

जल्द ही मार्गरेट समोआ के लोगों जैसे ही खा रही थी.

वह उनके जैसे बोलना भी सीख रही थी.

"लोग बहुत खुश लगते हैं जब मैं उनकी बताई बातें समझ जाती हूँ," उसने कहा.

"वे इतने प्रसन्न लगते हैं कि मुझे लगता है कि वे आपके लिए कुछ खास करेंगे," पेर सूर्य ने कहा.

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह विशेष चीज़ क्या थी?

इसलिए मार्गरेट का घर को बिना किसी दीवार के बनाया गया. वो उसमें बैठ कर सामोअन बच्चों को खेलते हुए देख सकती थी. कभी-कभी वह अमेरिका से लाए अपने कैमरे से युवाओं की तस्वीरें भी खींचती थी.

"उन्हें खेलने में मज़ा आता है, क्यों है ना?" पेर सूर्य ने कहा.

"क्या तुमने ध्यान नहीं दिया?" मार्गरेट ने कहा."वे सिर्फ खेलते ही नहीं, उससे भी कुछ ज्यादा करते हैं!"
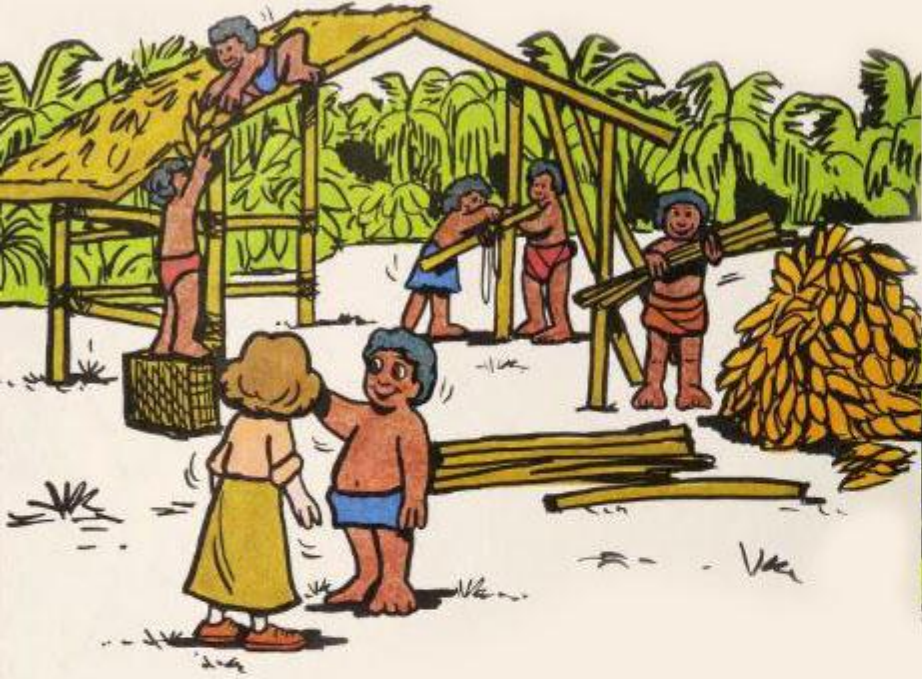
वहां लोग एक नया घर बना रहे थे ताकि मार्गरेट खुद अपने घर में रह सके.

"यह कितने आश्चर्य की बात है!" मार्गरेट ने कहा."लेकिन मुझे बहुत खुशी होगी अगर आप मेरे घर को ऐसा बनाएं ताकि उसमें छत हो, पर दीवारें न हों."

"कोई दीवार नहीं?" पेर सूर्य ने कहा. "पर आप बिना दीवारों का घर क्यों चाहती हैं?"

"जिससे मेरे चारों ओर जो कुछ चल रहा हो मैं उस सब को देख और सुन सकूं," मार्गरेट ने कहा, “सामोआ के लोगों को समझने के लिए मेरे लिए यह ज़रूरी है कि मैं खुद देखूं कि वे कैसे रहते हैं."

"तुमने सही कहा," पेर सूर्य ने कहा."ये बच्चे खेलने के साथ-साथ काफी काम भी करते हैं."

मार्गरेट ने देखा कि छह साल की उम्र के बच्चों को, अपने छोटे भाइयों-बहनों को खाना खिलाना और उनकी देखभाल करना सिखाया जाता था. कुछ समय तो माँ बच्चे के पास में रहती थी, लेकिन बाद में बच्चे ही एक-दूसरे का ध्यान रखते थे.

सामोअन लड़कियां कपड़ा बुनना भी सीखती थीं. नौ साल की लड़की अपने परिवार के लिए कपड़े बना सकती थी, और खाना भी. तेरह साल की एक सामोअन लड़की अपने परिवार का पूरा ध्यान रख सकती थी.

एक दिन मार्गरेट ने देखा कि एक युवक, नामू नाम की लड़की पर विशेष ध्यान दे रहा था.

बहुत सारी मछली

अलो बड़ी ईल के साथ

अलो नारियल के साथ

उस युवक का नाम अलो था, और वो अब अपनी पत्नी को चुनने के लिए तैयार था. ज्यादातर समोअन लड़कों की तरह, उसने डोंगी चलाना सीखा था. वो ईल और बोनिटो मछलियां भी पकड़ सकता था. वह तारो और नारियल के पेड़ लगा सकता था. पंद्रह साल का होने से पहले उसने इन सभी चीजों को सीखा था. समोआ के बच्चे मार्गरेट के "नोटबुक बच्चे" बन गए थे, ठीक उसी तरह जैसे वो अपनी माँ की नोटबुक बच्ची बनी थी.

"वे दिन का एक हिस्सा खेलने में बिताते हैं, "मार्गरेट ने अपनी नोटबुक में लिखा, "और दिन का कुछ हिस्सा काम करने पर भी खर्च करते हैं."

मार्गरेट न केवल, समोअन युवाओं के बारे में अपनी नोटबुक में लिखती थी, वह अपनी दादी को नियमित पत्र भी लिखती थी. कुछ समय एक द्वीप पर रहने के बाद, उसने उस विशेष समारोह के बारे में लिखा जिसमें नामु और अलो ने भाग लिया. वो किस प्रकार का समारोह था? आपको क्या लगता है.

यह एक शादी समारोह था! नामु और अलो बहुत खुश थे. उनके माता-पिता भी प्रसन्न थे. युवा जोड़े एक-दूसरे को बहुत पसंद करते थे, और वे एक-दूसरे की देखभाल करने के लिए अच्छी तरह से तैयार थे. नौ महीने बाद मार्गरेट मीड को, प्रोफेसर बोअज़ के सवाल का उत्तर मिला. "सभी लड़कों और लड़कियों के लिए खुश वयस्कों में विकसित होना बहुत मुश्किल नहीं है," उसने पेर सूर्य से कहा.

"कुछ बच्चों के लिए, बड़ा होने की प्रक्रिया कठिन होती है. लेकिन समोआ में यह काम काफी आसान था."

पेर सूर्य ने सहमति में अपना सिर हिलाया. "कम-से-कम, अमेरिका की तुलना में, सामोआ में बच्चों का बढ़ना आसान था!"
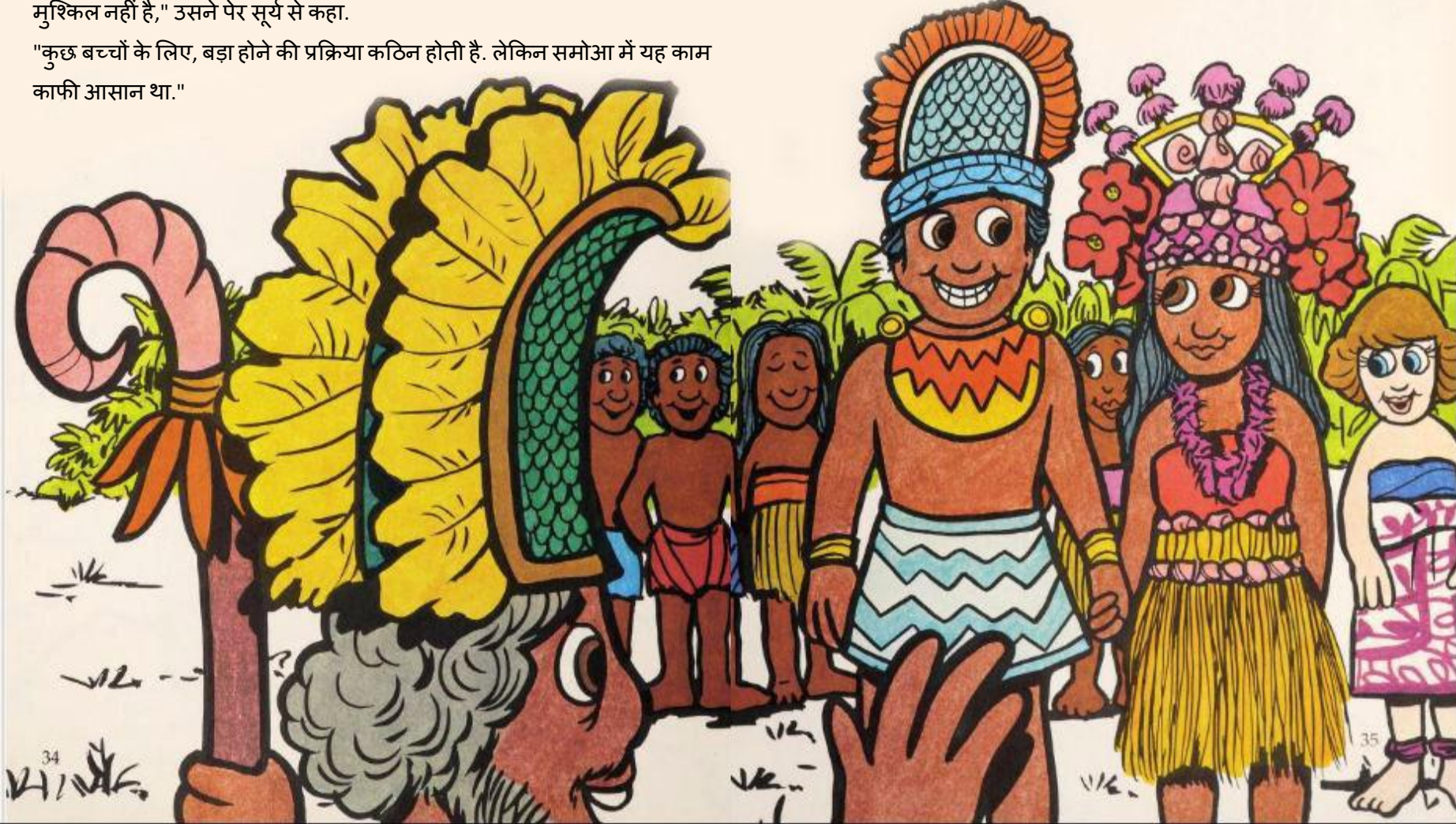
लेकिन मार्गरेट यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि उसके पास सही उत्तर था या नहीं. इसलिए उसने कई अन्य सामोअन लोगों से बातें कीं. हरेक ने वही बात कही. समोआ में बड़ा होना कोई मुश्किल काम नहीं था.

एक दिन, जब मार्गरेट अकेली थी तब पेर सूर्य ने कहा, "गाँव में हर कोई आपके साथ बात करना पसंद करता है."

"मुझे पता है," मार्गरेट ने कहा."यह बड़ी ख़ुशी की बात है. सामोअन लोग विनम्र हैं."

"हाँ, वे हैं," पेर सूर्य ने कहा, "लेकिन यही एकमात्र कारण नहीं है. उन्हें आपकी संगत में मज़ा आता है. क्योंकि आप हरेक की बात को बड़े ध्यान से सुनती हैं, इसलिए लोग खुद को महत्वपूर्ण समझते हैं. वे जानते हैं कि आप सच में उनके सोच और उनकी मान्यताओं को समझना चाहती हैं."

"आप उनके साथ हँसती हैं, और आप उन्हें हँसाती भी हैं. उन्हें वह पसंद आता है. किसी को भी वो अच्छा लगेगा."

यह सुनकर मार्गरेट खुश हुई और उसे अच्छा लगा. वह अपने काम के साथ-साथ लोगों पर लिखती रही और फोटो खींचती रही. जब मार्गरेट के घर लौटने का समय आया, तब तक सामोअन लोग उससे बेहद प्यार करने लगे थे. उनमें से कई ने उसे गले लगाया और उससे अलविदा कहा.

"मेरे लिए यह एक अत्यंत दिलचस्प समय था," मार्गरेट ने पेर सूर्य से फुसफुसाते हुए कहा, "लेकिन अब मैं घर लौटने और अपने परिवार के लोगों से मिलने को बहुत आतुर हूं."

जब मार्गरेट घर पहुंची तो सब में बहुत उत्साह था. "हमें सब कुछ बताओ!" बहनों ने रोते हुए कहा. "हाँ सब कुछ!" उसके भाई ने आदेश दिया. इसलिए मार्गरेट ने बताया कि वो कैसे ज़मीन पर पालथी मारकर बैठती थी और अपनी उँगलियों से खाना खाती थी. उसने बताया कि कैसे पत्थर के चूल्हों पर खाना पकाया जाता था और ताड़ के पत्तों पर उसे परोसा जाता था. उसने बिना दीवार के अपने घर के बारे में भी बताया, और नामू और अलो की शादी के बारे में भी.

जैसा कि मार्गरेट ने अपने अनुभवों का विस्तार से वर्णन किया, मीड परिवार का प्रत्येक व्यक्ति यह महसूस कर पाया कि यह समोआ में रहना कैसा था. "तुम्हारे अनुभवों के आधार पर एक सुन्दर पुस्तक लिखी जा सकती है," परिवार ने उसे सुझाया. और मार्गरेट ने ठीक वैसा ही किया. उसने समोआ में खुद लिखे नोट्स का अध्ययन किया फिर उसने अपनी पुस्तक लिखने का काम किया. इस पुस्तक का नाम है - “कमिंग ऑफ़ ऐज इन सामोआ”. इसमें बताया गया है कि किस तरह से युवाओं को उन द्वीपों में बड़ा किया जाता था, और वे कितनी खुशी-ख़ुशी बड़े होते थे. जब उसने यह पुस्तक लिखी तब मार्गरेट मीड मात्र छब्बीस वर्ष की थी. उसे लिखना बहुत कठिन लगा, लेकिन वो बहुत चाहती थी, कि लोग समोआ के रीति-रिवाजों को समझें.

प्रकाशित होने के बाद बहुत लोगों ने मार्गरेट की किताब पढ़ी.

"कितनी रोमांचक किताब है!" कुछ ने कहा. "यह एक साहसिक कहानी पढ़ने की तरह है. मैं लगभग महसूस कर सकता हूं कि समोआ में क्या होता होगा. सामोआ में ज़िंदगी कैसे चलती होगी, यह अब मैं समझ सकता हूँ."

जिन एंथ्रोपोलॉजिस्ट (मानवविज्ञानी) ने किताब पढ़ी, वे अब मार्गरेट द्वारा किए गए काम के मूल्य को देख पाए. वह "खुद मैदान में" गई फील्ड वर्क करने. वह वहां गई जहाँ लोग रहते थे ताकि वह उन्हें बेहतर ढंग से समझ सके. जल्द ही अन्य मानवविज्ञानी भी ऐसा ही करने लगे.

अब बहुत से लोग यह मानने लगे कि चीजों को करने के एक से अधिक तरीके हो सकते हैं. उन्होंने लोगों के बीच के मतभेदों को समझना और स्वीकार करना शुरू किया.

लेकिन मार्गरेट बहुत व्यस्त थी और वो अपनी पुस्तक से मची खलबल से बिल्कुल बेखबर थी.

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह क्या कर रही थी?

वह एक और नए टापू, नए स्थान की यात्रा कर रही थी!
एक बार फिर वह अपने घर से बहुत दूर थी.
"हम यह यात्रा क्यों कर रहे है, मार्गरेट?" पेर सूर्य ने पूछा. "मुझे लगता है कि तुम काफी समय अपने परिवार से दूर रह चुकी हो. क्या तुम्हें अपने माँ-पिता, दादी और भाई-बहनों की याद नहीं आएगी?"
"मुझे उनकी याद ज़रूर आएगी," मार्गरेट ने कहा, लेकिन मुझे अभी भी बहुत कुछ सीखना बाकी है. मैं इस बारे में अधिक समझना चाहता हूं कि लोग जिस तरह हैं, वैसे वे क्यों हैं."
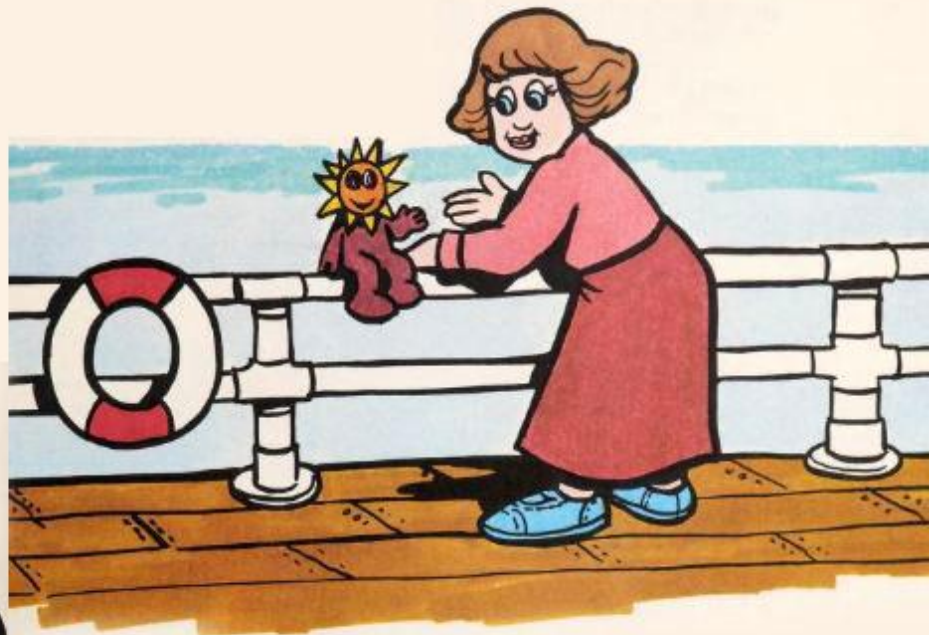
"यह बहुत बड़ा काम है," पेर सूर्य ने कहा. "अच्छी बात यह है कि तुम्हारे पास अपार ऊर्जा है."
"मुझे भी यह ठीक लगता है," मार्गरेट ने कहा. "मैं अचरज करती हूँ कि हम जैसे हैं, वैसे क्यों हैं? हम उस तरह से पैदा हुए हैं (पैदाइशी) या फिर बचपन में हमारी परवरिश ने हमें उस ख़ास आकार में ढाला ? अगर मैं बच्चों के ऐसे समूह का अध्ययन करूं जिन्हे अमरीकी बच्चों की तरह नहीं पाला-पोसा गया हो, तो शायद मैं इस प्रश्न का उत्तर खोज पाऊं."

एक लंबी यात्रा के बाद, मार्गरेट मीड और पेर सूर्य, “मानुस” नाम के आदिम टापू पर उतरे. यह द्वीप न्यू-गिनी के उत्तर में, एडमिरल्टी समूह का हिस्सा था. मार्गरेट अपने घर से छह हजार मील दूर थी.

"यह न्यूयॉर्क की तरह बिल्कुल भी नहीं है, क्यों?" पेर सूर्य ने कहा.

"यह जगह समोआ की तरह नहीं भी है."

हमेशा की तरह, पेर सूर्य की बात सही थी. मानुस जनजाति के लोग एक फूंस की झोपड़ी में रहते थे जो हरे पानी के ऊपर खड़े बांस के ढाँचे पर टिकी होती थीं. वहां के लोग ऊंचे थे, और उनकी त्वचा भूरी थी. पुरुष लंगोटी पहनते और अपने बालों को चोटी में बांधते थे. महिलायें घास की स्कर्ट पहनती थीं और अपना सिर मुंडवाती थीं. और बच्चे? यहाँ के बच्चे भी समोआ के बच्चों से बहुत अलग थे. क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वे कैसे अलग थे?

यहाँ पर बच्चे कोई काम नहीं करते थे. यहाँ बच्चे सुबह से रात तक खेलने के अलावा और कुछ नहीं करते थे. वे थकने तक पानी में डोलते-खेलते रहते थे. फिर वो कुछ देर आराम करते थे, और फिर दुबारा खेलते थे.

वहां बड़े बच्चों को भी कोई जिम्मेदारी नहीं दी जाती थी.

अगर वो कोई काम नहीं करना चाहते थे, तो फिर वो उसे बिल्कुल नहीं करते थे.

"कुछ समझ नहीं आता!" पेर सूर्य ने कहा. "बड़े होने पर वे किस तरह के वयस्क बनेंगे?"

"यही पता लगाने के लिए तो हम यहाँ आए हैं,” मार्गरेट ने कहा. फिर उसने मानुस जनजाति के वयस्कों का अध्ययन किया. उसने क्या पाया?

उसने ऐसे युवक देखे जो दुखी और क्रोधित थे. उन युवकों को शादी के लिए मनपसंद लड़कियां चुनने की अनुमति नहीं दी जाती थी. शादी के लिए लड़की उनके माता-पिता ही पसंद करते थे. और उस शादी के लिए लड़के के माता-पिता को, लड़की के माता-पिता को, बहुत पैसा देना पड़ता था.

शादी के बाद, लड़का भारी कर्ज में डूब जाता था, क्योंकि उसे अपनी दुल्हन पर खर्च किए पैसे अपने पिता को चुकाने पड़ते थे. ऐसी स्थिति में ज्यादातर लड़के खुद को फंसा और नाराज महसूस करते थे. और चूंकि लड़कों-लड़कियों को एक-दूसरे की देखभाल करना नहीं सिखाया गया था, इसलिए ऐसे जोड़े अक्सर बहुत दुखी रहते थे.
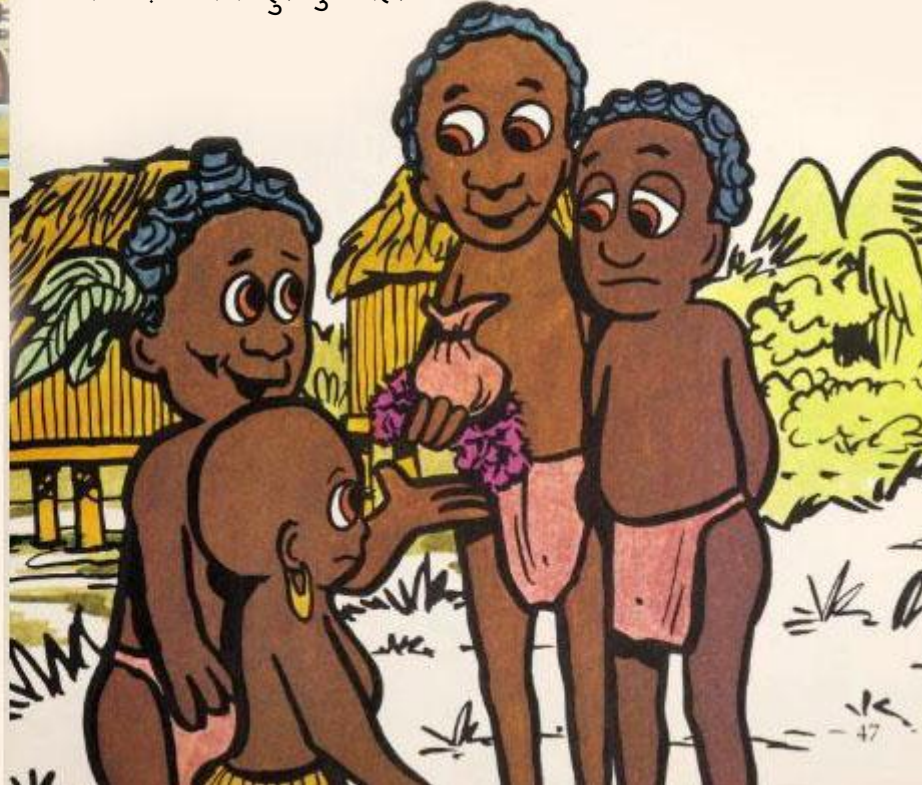
"अरे वाह!" पेर सूर्य ने कहा. "मानुस में बड़ा होना समोआ में बढ़ने से बहुत अलग है. यह अलग हो सकता है, लेकिन यह बहुत अच्छा नहीं है."
"बिल्कुल ठीक!" मार्गरेट ने सोच समझकर कहा. "क्या तुम सोच सकते हो कि हमारे युवा दोस्त नामू और अलो, अगर अगर यहां पर बड़े हुए होते तो वे कितने नाखुश होते?"
"वे शायद गुस्सैल होते, जैसे यहाँ पर बहुत से लोग हैं," पेर सूर्य ने कहा.

अब युवा मानवविज्ञानी मार्गरेट के पास उसके पुराने प्रश्न का उत्तर था. "हम वयस्कों के रूप में जो कुछ भी करते हैं, वह इस बात का परिणाम है कि हम कहां और कैसे बड़े हुए," मार्गरेट ने कहा.
और क्योंकि मार्गरेट इस बात को समझती थी, उसने मानुस के लोगों के व्यवहार और रीति-रिवाज़ों की कभी भी आलोचना नहीं की.

मार्गरेट मीड को पता था कि अगर लोग अलग हों, तो आप उन्हें उसका दोषी नहीं ठहरा सकते. यदि लोगों के अलग-अलग अनुभव हैं, तो वे निश्चित रूप से अलग-अलग तरीके से बड़े होंगे. यदि आप लोगों को समझना चाहते हैं, तो पहले आपको उनकी जीवन-शैली को समझना होगा, जो अक्सर आपके खुद के जीने के तरीके से बहुत भिन्न होगी. हालाँकि, मानुस के लोग नाराज़, गुस्सैल और दुखी थे, लेकिन वे जानते थे कि मार्गरेट एक बहुत ही खास इंसान थीं.

मार्गरेट ने सभी लोगों की बातों का ध्यान दिया और उसने जनजाति के हर सदस्य का सम्मान किया. वो उन्हें समझती थीं और उन्हें उनकी ही स्थिति में स्वीकार करती थीं, शायद इसलिए वे लोग उसे प्यार करते थे. जब मार्गरेट ने मानुस को छोड़ा, तो लोगों ने बहुत उदास होकर अपने ड्रम (नगाड़े) जोर से बजाए. एक बुद्धिमान और समझदार महिला उन्हें अब छोड़ रही थी इसका उन्हें दुःख था. एक मित्र को श्रद्धांजलि देने का उनका यह तरीका था.

"जल्दी वापिस आना, मिस मार्गरेट!" वे चिल्लाये.

"दुबारा वापिस आकर हमसे फिर मिलना!"

मानुस की यात्रा के बाद मार्गरेट मीड ने दक्षिण समुद्र में अपनी यात्रायें ज़ारी रखीं. वह आठ अलग-अलग आदिम जनजातियों के साथ जाकर रहीं और उन्होंने उनके तौर-तरीकों का अध्ययन किया. उनमें से कुछ नाम हमें ज़रूर अजीब लगेंगे - सामोआ, मानुस, और बालिनीस. साथ में अरपेश, मुंडुगुमोर, तचंबुली, और आईटमुल जनजातियां भी थीं. इन लोगों के बीच रहने के साथ-साथ मीड ने प्रत्येक जनजाति की भाषा बोलना भी सीखी. वह ध्यान से देखतीं और गौर से हर बात सुनती थीं कभी. फिर वो उन्हें समझने की कोशिश करती थीं.

"ये सभी लोग मेरे शिक्षक रहे हैं," उसने पेर सूर्य से कहा. "हर एक ने मेरी समझ में कुछ-न-कुछ जोड़ा है."

जब वह बड़ी हुई, तो मार्गरेट को लगा कि अन्य लोगों को समझने से उसे खुद को समझने में मदद मिली थी. "मैं जो कुछ हूं, वैसी इसलिए हूँ क्योंकि मैं उस तरह से बड़ी हुई," उन्होंने कहा.

"यह सच है," पेर सूर्य ने कहा. "जब आप छोटे होते हैं तब आप अपने माता-पिता से सीखने और अन्य लोगों को समझने के बारे में बातें सुनते हैं. अक्सर आप दोनों माता-पिता को पढ़ते-लिखते हुए भी देखते हैं."

मार्गरेट ने हामी में सिर हिलाया. "यह प्राकृतिक है कि बड़े होकर मैं भी कुछ-कुछ वैसा ही करना चाहूं."

और मार्गरेट बड़ी खुशी से अपने काम में लगी रही. उसने खुद चौबीस पुस्तकें लिखीं, और अन्य लोगों के साथ मिलकर अट्ठारह और पुस्तकें लिखीं.

मार्गरेट लगभग पच्चीस वर्षों से काम, शोधकार्य और पढ़ाई-लिखाई कर रही थीं, जब उन्होंने एक बहुत ही दिलचस्प समाचार सुना!

वो खबर क्या थी? आपको क्या लगता है.

उसने सुना कि जो लोग मानुस द्वीप पर रहते थे - वे लोग जो कभी बड़े गुस्से में थे – अब वे खुश थे."क्या खूब!" मार्गरेट ने कहा."मुझे इसे खुद जाकर देखना चाहिए."
बेशक. मार्गरेट हमेशा अपने विचारों को अपने साथ लेकर चलती थी,
इसलिए पेर सूर्य भी उसके साथ मानुस लौटा.
वहां उतरने और चारों ओर देखने के बाद पेर सूर्य ने कहा, "वे खुश लग रहे हैं."
जब मानुस के लोगों ने अपनी पुरानी मित्र मार्गरेट को देखा, और वे उसे गले लगाने के लिए दौड़े. जो बच्चे मार्गरेट को जानते थे वे अब बड़े हो गए थे. उन्होंने मार्गरेट के साथ खूब बातें कीं और हंसे.

"लेकिन तुम बहुत अलग लग रहे हो!" मार्गरेट ने कहा."जब मैं यहाँ पहली बार आई थी और अब के बीच क्या हुआ?"
"इस क्षेत्र में एक युद्ध हुआ," एक आदमी ने कहा, "और अमेरिकी सैनिक यहां आकर उतरे. हमारे द्वीप में कैसे रहना है यह हमने उन्हें सिखाया. बदले में, उन्होंने हमें अमेरिका के बारे में बहुत कुछ बताया. हमने देखा कि हम जो कुछ चीजें कर रहे थे वे हमें दुखी कर रही थीं. फिर हमने फैसला किया कि हम अपने बच्चों के साथ अलग तरह से व्यवहार करेंगे." "हमने अमेरिकियों से बहुत कुछ सीखा," मानुस की एक महिला ने कहा.
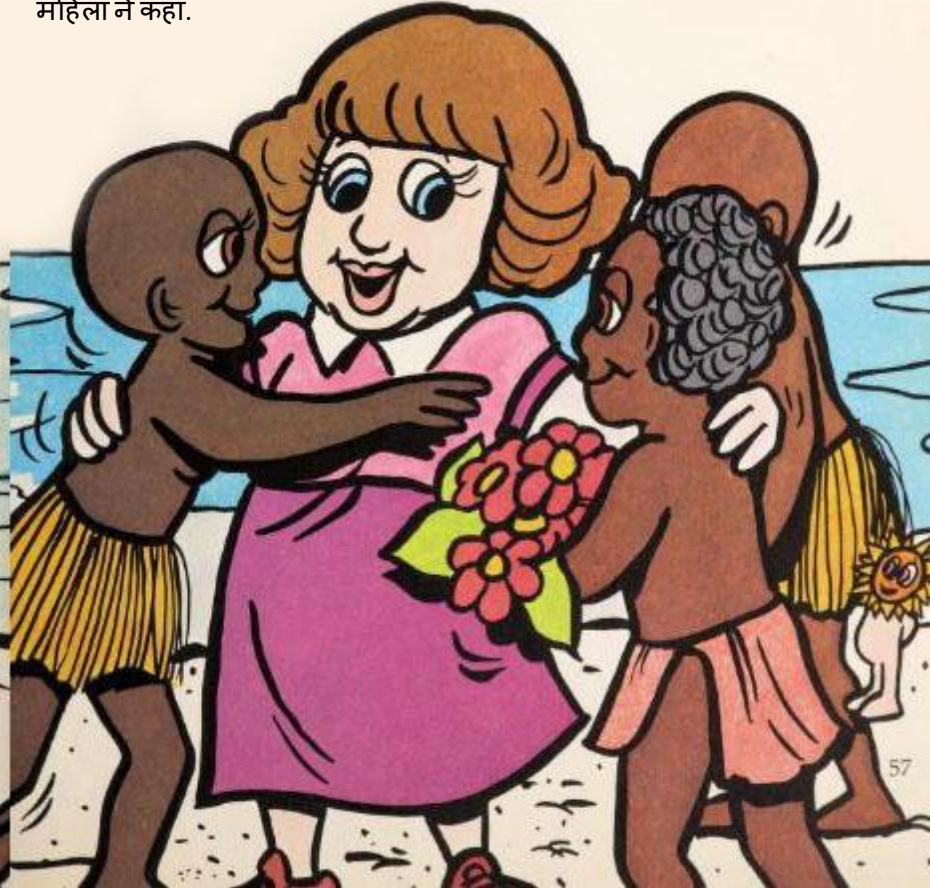
"और हमने आपसे भी बहुत कुछ सीखा है," मार्गरेट ने उन्हें बताया.
"वास्तव में, दुनिया भर के लोगों ने आपसे सीखा है."
"जब मैं बहुत साल पहले यहां आई तो मुझे उम्मीद थी कि मैं आपको समझने की कोशिश करूंगी, और दूसरों को भी आपको समझने में मदद करूंगी.
मुझे विश्वास था कि इस समझ से, हम सभी, खुद अपने आप को बेहतर तरीके से जान पाएंगे. आज मेरी उम्मीदें सच बनीं गईं. आज, बहुत से लोग मानुस द्वीप के बारे में जानते हैं, और इस ज्ञान ने उन्हें यह देखने में मदद की है कि वे जैसे हैं, वैसे वे क्यों हैं."

जब मार्गरेट का फिर से मानुस छोड़ने का समय आया, तो लोगों ने उसे गले लगाया, और उन्होंने बड़े दुःख के साथ अपनई प्रिय "मिस मार्किट" को अलविदा कहा.
मार्गरेट मीड ने दुनिया भर में अपनी यात्राएं जारी रखीं, लेकिन वो कभी भी दक्षिण समुद्र के लोगों द्वारा सिखाए सबक को कभी नहीं भूलीं.
वो और अधिक जानने और समझने के लिए हमेशा तैयार रहती थीं.
और उन्होंने जो कुछ भी सीखा उसे उन्होंने लोगों के बड़े समूहों को अपने भाषणों और किताबों के ज़रिये समझाया. उन्होंने कई मुद्दों पर बातें कीं - महिला अधिकारों, बच्चों के पालन-पोषण, प्रदूषण और ऊर्जा संकट पर.
जब मार्गरेट मीड सत्तर वर्ष से अधिक की थीं, तब भी लोग उन्हें सुनने के लिए आते थे, और हर कोई उनकी अपार ऊर्जा देखकर दंग रह जाता था.
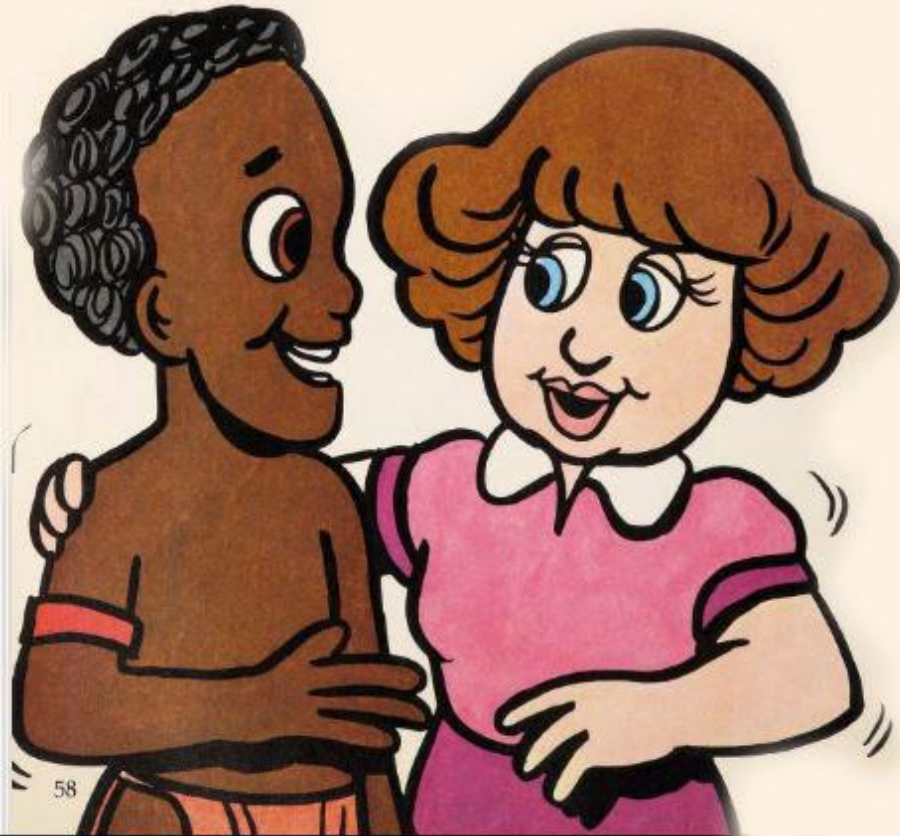
वह हर जगह नज़र आती थीं. उन्हें न्यूयॉर्क की सड़कों पर छड़ी झूलाते हुए किसी मीटिंग में जाते हुए देखा जा सकता था. रेडियो पर उनके साक्षात्कार आते थे और टेलीविजन पर उनके कार्यक्रम दिखाए जाते थे. उन्होंने तमाम पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे. लगभग हर कोई उसके साथ समय बिताना चाहता था.

लोग सामयिक मसलों और महत्वपूर्ण प्रश्नों पर मार्गरेट मीड की राय जानना चाहते थे.

शायद आप किसी आदिम द्वीप पर वहां के लोगों के तौर-तरीके सीखने के लिए नहीं जाना चाहेंगे. आप शायद अन्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से चीजों को कैसे देखें इस बात को घर बैठे ही सीखना चाहेंगे. शायद जब आप किसी अन्य की बात को समझते हैं, और वो आपकी, तो फिर दोनों लोग खुशी महसूस करते हैं.

बिलकुल यही काम हमारी समझदार मित्र मार्गरेट मीड ने किया.

मारग्रेट मूड का जन्म 16 दिसंबर 1901 को फिलाडेल्फिया पेंसिल्वेनिया में हुआ था. उनके पिता, एडवर्ड शेरवुड मीड, अर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे, और उनकी माँ एमिली फॉग मीड, एक सामाज वैज्ञानिक थीं. उनके पिता की मां, मार्था रामसे मीड, एक अग्रणी बाल-मनोवैज्ञानिक थीं. वो मार्गरेट के परिवार के साथ ही रहती थीं. इसलिए मार्गरेट का बचपना एक ऐसे माहौल में बीता जिसने उसे बौद्धिक रूप से सतर्क और जागरूक बनाया.

मार्गरेट ने एक वर्ष के लिए इंडियाना के डेपॉउ विश्वविद्यालय में पढ़ाई की. फिर वो बार्नार्ड कॉलेज में पढ़ने न्यूयॉर्क चली गई. बाद में उसने कोलंबिया विश्वविद्यालय से मानव-विज्ञान (एंथ्रोपोलॉजी) में पीएचडी अर्जित की.

मार्गरेट मीड ने मानवविज्ञान में अनुसंधान के लिए एक नए दृष्टिकोण का बीड़ा उठाया. वो था "फील्ड" यानि क्षेत्र में जाकर लोगों के बारे में अधिक समझने के कोशिश. इसके लिए उन्होंने दुनिया के आदिम समाजों का अध्ययन किया. उनका पहला आयोजित अभियान समोआ समूह के इओ के द्वीप में था, जहां उन्होंने 1926 में संयुक्त राज्य अमेरिका लौटने पर आदिम परिस्थितियों में किशोर लड़कियों के विकास का अध्ययन किया था. मीड को अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री में मानव-विज्ञान का सहायक क्यूरेटर नियुक्त किया गया था. न्यूयॉर्क में अमेरिकन म्यूज़ियम के साथ उनका जुड़ाव जीवन भर जारी रहा.

मीड की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "कमिंग ऑफ़ ऐज इन सामोआ", 1928 में पूरी हुई और प्रकाशित हुई, इससे पहले कि वह एडमिरल्टी द्वीप समूह के मानुस टापू का अध्ययन करने के लिए रवाना हुईं. समोआ और एडमिरल्टी के अपने फील्ड ट्रिप के बाद, उन्होंने प्रशांत महासागर के अन्य लोगों - Arapesh, Mundugumoc, Tchamhuli का भी अध्ययन किया. वह इन लोगों के बीच रहतीं और उनकी भाषा बोलना सीखती थीं.

मार्गरेट मीड
(1901 – 1978)

मीड ने चौबीस पुस्तकों खुद अकेले लिखीं और 18 पुस्तकों को अन्य सह-लेखकों के लिखा. उसने वैज्ञानिक निबंधों के साथ-साथ लोकप्रिय पत्रिकाओं में सैकड़ों लेख लिखे और व्याख्यान दिए.

1974 में, जब वह 72 वर्ष की थीं तब मार्गरेट मीड को — पुरुष-प्रधान ढाँचे में एक महिला को, अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ द एडवांसमेंट ऑफ साइंस का प्रमुख चुना गया. यह कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों में से एक था. वह शायद दुनिया की सबसे प्रसिद्ध मानवविज्ञानी थीं! लेकिन वह अपनी प्रसिद्धि से अप्रभावित रहीं.

वह अपने शोध और अपने दोस्तों के प्रति हमेशा वफादार रहीं. उन्होंने लेखन अपने व्याख्यान देने का सिलसिला ज़ारी रखा. उन्होंने लगभग हर दिन संग्रहालय में अपने कार्यालय में काम किया.

मार्गरेट मीड एक अद्भुत उदाहरण थीं - अक्लमंदी और ऊर्जा का. जीवन में स्पष्ट उद्देश्य होने पर किसी भी उम्र के लोग कुछ भी कर सकते हैं, उनका उद्देश्य लोगों को, समाजों को अधिक गहराई समझना था. इस ज्ञान का उपयोग से उन्होंने दूसरों की मदद की.

एक बार उन्होंने कहा : "मानव जाति के बारे में ज्ञान, अगर श्रद्धा में माँगा जाए तो वो जीवनदाई हो सकता है."